Subject - Sociology
B.A III rd year
Paper I - Perspectives in Sociology
Topic - Historicism
Reading material - by Professor Sangeeta Pandey
D.D.U Gorakhpur University

Historicism (ऐतिहासिकतावाद)

ऐतिहासिकतावाद एक ऐसा परिप्रेक्ष्य है जिसके अन्तर्गत समस्त यथार्थ को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया जाता है। 1797 में फ्रेडरिक श्लेगल ने इसे इतिहास को महत्व देने वाले दर्शन के रूप में परिभाषित किया था। 1922 में अर्नस्ट ट्रोल्स ने इसे स्पष्ट करते हुये अपनी कृति- 'Historicism and its Problems' में लिखा - 'ऐतिहासिकतावाद एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसके अन्तर्गत सभी ज्ञान और सम्पूर्ण मानव अनुभव की व्याख्या ऐतिहासिक परिवर्तन के सन्दर्भ में की जाती है।' ऐतिहासिकतावाद में परिवर्तन ही केन्द्रीय विषय है। मॉरिस मैंडलबाम ने - 'The Problem of Historical knowledge', में लिखा - 'ऐतिहासिकतावाद परिवर्तन के तथ्य को गम्भीरता से लेता है (लेने का प्रयास करता है) यह हर विशिष्ट तथ्य की व्याख्या इसे उत्पन्न करने वाले परिवर्तन के रूप में ही करता है।' उन्नीसवीं- बीसवीं सदी के समाजशास्त्री और दार्शनिक अपने विचारों में इसे प्रमुखता देते रहे। इस समय में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में इस परिप्रेक्ष्य का प्रभाव देखने को मिलता है।

ऐतिहासिकतावाद की सर्वप्रमुख मान्यताएं :-

(1) ऐतिहासिकतावाद की यह प्रमुख मान्यता है कि सभी मानव-विचार, सभी ज्ञान, सभी आदर्श 'परिवर्तन' के अधीन हैं।

Scanned by CamScanner

"The core of historicism consists in the recognition that all human ideas and ideals are subject to change..."

2. यह एक विश्वदृष्टि के रूप में ~~[illegible]~~ स्वीकृत रहा है।

3. यह परिवर्तन (change) की घटना के प्रति समर्पित परिप्रेक्ष्य है।

4. कार्ल मैनहाइम ने इसे परिवर्तन का व्यवस्थित सिद्धान्त माना है।

5. कार्ल पॉपर 'ऐतिहासिक भविष्यवाणी' को ऐतिहासिकतावाद का मुख्य लक्ष्य मानते हैं।

6. टेलकाट पारसन्स स्वीकारते हैं कि ऐतिहासिकतावाद में Atomic आणविक एवं wholistic समष्टिगत दोनों प्रवृत्तियाँ निहित हैं।

7. ट्रोल्श और मीनेकी जहाँ आणविक प्रवृत्ति को स्वीकारते हैं वहीं कार्ल मैनहाइम, पॉपर समष्टिवादी प्रवृत्ति को।

8. लीविस ए० कोज़र मानते हैं की ऐतिहासिकतावाद में 'सापेक्षवाद' महत्वपूर्ण है। विशेषतः जर्मन ऐतिहासिकतावाद स्वीकारता है कि किसी भी विचार और मानवक्रिया का मूल्यांकन उसके सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और ऐतिहासिक समय/युग के ही सन्दर्भ में किया जा सकता है।

9. कार्ल मैनहीम ने स्वीकारा है कि इसमें ऐतिहासिक क्रमबद्ध विश्लेषण के आधार पर परिवर्तन की व्याख्या महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक अनुक्रम पद्धति का भी प्रयोग उपयोगी है। ~~जिससे~~

10. कार्ल मार्क्स ऐतिहासिकतावाद के सबसे विख्यात समाजशास्त्री हैं। मार्क्स के ऐतिहासिकतावाद के केन्द्र में 'आर्थिकवाद' Economism निहित है।

Scanned by CamScanner

11. मार्क्स का विचार था A प्रथम ऐतेहासिक क्रिया भौतिक जीवन का ही उत्पादन है।
कार्ल मार्क्स ने - 'Selected Writings in Sociology and Philosophy (London, McGraw Hill, 1964 Page 60) पर लिखा, 'The first historical act is the production of material life itself..." "This is indeed a historical act, a fundamental condition of all history..."

12. इस प्रकार, मार्क्स ऐतेहासिक परिवर्तन को उत्पादन रीति के परिवर्तन पर आधारित मानते हैं।

13. मार्क्स के अनुसार - मानव समाज का इतिहास मानव क्रिया द्वारा सतत एवं अन्तर्भूत पुरोगामी परिवर्तन से गुजरता है।

14. मार्क्स के विचार से ऐतेहासिक परिवर्तन वर्ग संघर्ष के द्वारा होते हैं
"..The history of all hitherto existing society is the history of class struggles....."

x———x

References

1. K. Marx, Selected writings in Sociology and Philosophy (London, McGraw Hill, 1964.)

2. डा॰ संगीता पाण्डेय, अग्रणी समाजशास्त्री एवं आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या.

Scanned by CamScanner